आजीविका फ्रेश

(सब्जी, कृषि उत्पाद तथा अन्य सभी ग्रामीण उत्पादों के विक्रय का एक स्थान)

किसानो एवं ग्राम सभाओं के साथ मिलकर की गई एक पहल

म0प्र0 ग्रामीण आजीविका परियोजना भोपाल

आजीविका फ्रेश

दृष्टिकोण

म0प्र0 ग्रामीण आजीविका परियोजना प्रदेश के 9 अनुसूचित जनजाति बाहुल्य जिलों में आजीविका के साधनों को बढ़ाने एवं मजबूत करने के लिये संचालित है। इन जिलों में ग्रामीण समुदाय की आजीविका के प्रमुख साधनों के रूप में खेती ही प्रधान है। वे खेती करते हैं और अपने आस पास के क्षेत्रों में कृषि मजदूरी भी करते हैं। यह भी सच ही है कि यदि इन परिवारों की आर्थिक परिस्थितियों को बेहतर बनाना है तो खेती को छोड़कर यह संभव नही है। बल्कि खेती ही प्रमुख आधार है, जिसे बेहतर बनाकर, कास्त व्यय में कमी लाकर उत्पादन बढ़ाकर, अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है और ऐसा करके बहुत बड़ी संख्या में ग्रामीणों के जीवन स्तर को उंचा उठाया जा सकता है। इन्ही प्रयासों में से कुछ प्रयास हैं, खेती को लाभ का धंधा बनाने के लिये किसानों को नई तकनीक एवं वैज्ञानिक पद्वतियों से परिचित कराना और उनकी क्षमतावृद्बि करना ताकि वे न केवल उपलब्ध संसाधनों द्वारा ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सके बल्कि अपने लिये आवश्यक एवं उपयोगी संसाधनों, शासकीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों का लाभ भी ले सकें।

किसान अपने खेतो से ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सके इसके लिये अनाज की अच्छी पैदावार और गुणवत्ता के लिये उन्हे उन्नत बीज उपलब्ध कराया जा रहा है तथा कृषि की उन्नत तकनीकों से अवगत कराया जा रहा है। खेतो की मेढ़ो पर और खाली जमीन पर जहां वे खेती नही करते है वहां पर बांस, आंवला एवं फलदार वृक्ष लगवाये गये है, गांव में बड़े पैमाने पर किसानों को सब्जी उत्पादन से जोड़ने का काम किया गया है। इसमें दो तरह के प्रयास किये गये है (1) जो किसान बिलकुल भी सब्जी नही लगाते थे उन्हे अपनी जरूरत के लिये लगाने हेतु प्रेरित किया गया है। (2) जो किसान थोड़ी मात्रा में लगाते थे उन्हें व्यवसायिक पैमाने पर लगाकर बेचने के लिये प्रेरित किया गया है। **परिणाम स्वरूप 9 जिलों में कुल मिलाकर 1438 गांव के लगभग 56138 किसान 15798 हेक्टर क्षेत्र में सब्जी उत्पादन का कार्य कर रहे है।**

बड़े पैमाने पर सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू होने और आसपास के क्षेत्रों में बेचने से होने वाले लाभ के बाद यह सोचा गया कि किसानों को सब्जी बेचने के लिये बाजार उपलब्ध कराया जाए, जिससे उन्हे ज्यादा लाभ हो सके। अभी किसान अपने गांव में और आस–पास के हाट बाजारों में अपनी सब्जियां बेच रहे थे। सब्जी बेचने के इन अनुभवों ने महसूस कराया कि सब्जी बेचने का काम यदि किसानों के द्वारा संगठित होकर व्यवस्थित तरीके से अपनी स्वंय की दुकान से किया

जाए तो ज्यादा लाभ कमाया जा सकता है। क्योंकि ऐसा करने से उनकी सब्जी सीधे शहर के ग्राहकों तक पहुंचेगी और बिचौलियों से होने वाला नुकसान भी नही होगा। **किसानों के साथ हुई चर्चा एवं अनुभवों के आधार पर आजीविका कार्य क्षेत्र के आठ जिलों में अभी 18 सब्जी विक्रय दुकाने खोली गई हैं, जिन्हें ''आजीविका फ्रेश'' नाम दिया गया है।**

असल में सोच तो और भी बड़ी है, सोच यह है कि इन आजीविका फ्रेश को ग्रामीण क्षेत्रों में बनाये जाने वाले हस्तशिल्प, खाद्य पदार्थ एवं घरेलु उपयोग की अन्य आवश्यक वस्तुओं के मिलने का एक उपयोगी केन्द्र बनाया जा सके। ऐसा केन्द्र जहां पर सभी ग्रामीण अपनी वस्तुओं को बेचने के लिये ला सकें और ग्राहकों को सभी ग्रामीण उत्पाद एक केन्द्र पर उपलब्ध हो सकें। शहडोल, श्योपुर, मण्डला, डिण्डोरी, बड़वानी के आजीविका फ्रेश ने ग्रामीण उत्पाद इस केन्द्र पर लाकर इस सोच को क्रियान्वित करने की दिशा में ठोस कदम उठाने की शुरूआत की है।

प्रक्रिया

सब्जी उत्पादन के कार्य में लगे किसानों के गांववार छोटे–छोटे समूह बनाये गये है, समूहों में उन्हें जानकारी दी जा रही है एवं आवश्यक सहयोग जरूरतों के आधार पर किया जा रहा है। समूह स्वयं संचालन की पूरी प्रक्रिया चला रहे है।

चूंकि कार्य अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है अतः इसे लगातार एवं सघन सहयोग की आवश्यकता होगी। इन समूहों को और इस प्रक्रिया को स्थायित्व एवं मजबूती प्रदान करने के लिये प्रशिक्षण, तकनीकी ज्ञान, संसाधन एवं वित्तीय सहयोग के लिये कृषि विभाग एवं नाबार्ड से चर्चा की गई है। निकट भविष्य में इन आजीविका फ्रेश का बैंको से लिंक किये जाने की योजना है।

वर्तमान में आजीविका फ्रेश से खास विशेषताओं के साथ जैसे सही तौल, सही कीमत एवं जैविक गुणों के साथ सब्जी बेचने एवं अन्य ग्रामीण उत्पादों को बेचनें का काम किया जा रहा हैं। अलग–अलग जिलों में आजीविका फ्रेश पर अलग–अलग उत्पाद विक्रय के लिये रखे गये हैं, श्योपुर में खिलोने, उन्नत बीज, शहद, दूध, गोंद, सतावर, सफेद मूसली, बड़वानी में मसाले, शहडोल में कोदों, कुटकी, दाले, चावल, गेंहु, बेसन लक्ड़ी के खिलोने, बड़ी पापड़ अचार, शीशल फाईबर, जूट एवं परसन के सजावटी समान, मसाले, बांस की टोपी, सिले हुये कपड़े, अलीराजपुर में शहद, मण्डला में शीशल फाइबर से बने सजावटी सामान, दालें, कोंदो, कुटकी, रागी, ज्वार, मक्का, डिण्डोरी में कृषि उपकरण, हैण्डलूम के उत्पाद, कोदों कुटकी आदि बेचें जा रहे है। इस प्रक्रिया से

किसान बहुत खुश है और इस काम को ज्यादा मजबूत बनाना चाहते है। वर्तमान में परियोजना के 08 जिलों में 18 आजीविका फ्रेश का संचालन किया जा रहा है। निकट भविष्य में कुछ और भी खुलने की सम्भावना है।

अभी 8 जिलों के इन 18 आजीविका फ्रेश में लगभग 106 गांव के 274 किसानों की सब्जी बारी–बारी से बिकने के लिये आ रही है। अभी तक कुल अनुमानित बिक्री 7,91,750/– रूपये और कुल अनुमानित लाभ 2,31,332/– रूपये का प्राप्त हो चुका है।

आजीविका फ्रेश की जिलेवार जानकारी

क्रं	जिला	आजीविका फ्रेश की संख्या	कृषक संख्या	गांव संख्या	सामान	बिक्री	मुनाफा
1	श्योपुर	5	72	47	सब्जी, खिलोने, उन्नत बीज, शहद, फल, दूध, गोंद, सतावर, सफेद मूसली	461052	138361
2	धार	3	22	09	सब्जी	84000	27000
3	बड़वानी	1	13	04	सब्जी, हल्दी, मिर्च, धनिया	51100	14500
4	शहडोल	3	80	18	कोंदो, कुटकी, शीशल फाईबर, जूट, परसन के सजाबट के सामान, लक्ड़ी के खिलोने, बरी, हल्दी, धनिया, मिर्च, बांस की टोपी, सिले हुये कपड़े सभी प्रकार की दालें, चावल, गेंहु, बेसन	72000	16000
5	झाबुआ	2	23	05	सब्जी, भुट्टे	38400	15400
6	अलीराजपुर	1	18	03	सब्जी, शहद	22198	6571
7	मण्डला	2	42	08	शीशल से बने हुये उत्पाद, ज्वार, सब्जी, कोदो, कुटकी, रागी मक्का	20000	5500
8	डिण्डोरी	1	04	12	कोंदो, कुटकी, कृषि यंत्र, हेण्डलूम के उत्पाद, सब्जी	43000	8000
		18	**274**	**106**		**791750**	**231332**

जिलेवार सब्जी उत्पादन करने वाले कृषकों की प्रगति :–

क्रं	जिला	कृषक संख्या	क्षेत्राच्छादन	ग्रामों की संख्या जिनमें सब्जी की खेती की जा रही है	परियोजना के कुल ग्रामों की संख्या
1	धार	7866	2167	225	445
2	झाबुआ	10522	2929	211	211
3	अलीराजपुर	6268	1662	125	191
4	बड़वानी	7850	2960	130	315
5	मण्डला	5433	1377	155	431
6	डिण्डोरी	4712	991	235	340
7	शहडोल	5500	2500	100	350
8	अनूपपुर	4672	509	152	384
9	श्योपुर	3315	703	105	234
		56138	**15798**	**1438**	**2901**